Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

कालिदास का वात्सल्य विप्रलम्भ

उमेश चन्द्र मिश्र
प्रवक्ता (P.G.T.)-संस्कृत
जे.बी.सी.+२ विद्यालय
जामताड़ा,झारखण्ड

शोध आलेख सार– महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों के माध्यम से तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक जीवन का परिदृश्य बड़े ही सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक का यह श्लोक भाव, भाषा, नैसर्गिकता, प्रेम, प्रतिभा, कल्पनाशक्ति, वात्सल्यता एवं मार्मिकता के कारण साहित्य प्रेमियों को करुण रस से ओत-प्रोत कर देता है ।

मुख्य शब्द– कालिदास, वात्सल्य, विप्रलम्भ, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, संस्कृत।

भारत का गौरवमय अतीत एवं प्राचीन भारत का संपूर्ण इतिहास संस्कृत वाङ्मय में ही संनिहित है। संस्कृत भाषा अपनी प्राचीनता के साथ ही व्यापकता, विशालता, गंभीरता, विविधता, उदात्तता एवं साहित्यिक रस परिपूर्णता के कारण सर्वोच्च शिखर पर विद्यमान रही है।[1]

संस्कृत साहित्य की असाधारण मनोरमता, सुन्दर भावो की अभिव्यक्ति की बात करे तो विद्वद्जनों की एक प्रसिद्ध उक्ति है –

काव्येषु नाटकं रम्य,तत्र रम्या शकुन्तला |
तत्राSपि च चतुर्थोंSकस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्||[2]

अर्थात् काव्यों में नाटक रमणीय है और नाटको में अभिज्ञानशाकुन्तलम् उसमे भी चतुर्थ अंक तथा चतुर्थ अंक का चार श्लोक रमणीय है|

अभिज्ञानशाकुन्तल का ४ श्लोक अपने मार्मिक भाव, घटनाओ की सार्थकता, रचना- कौशल, चरित्र – चित्रण में वैयक्तिकता ,कल्पना शक्ति और अर्थगम्भीरता के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध है | इन चार श्लोको में एक श्लोक अपनी विप्रलंभ वात्सल्यता के कारण सर्वश्रेष्ठ श्लोको में गिना जाता है ; जो निम्नांकित है –

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कंठया
कंठ: स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्|

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकस:
पीड्यन्तेगृहिण: कथं नु तनयाविश्लेषदुखैर्नवै: ||[3]

अर्थात् एक पालनकर्ता पिता अपनी पुत्री की विदाई के समय कहता है की आज शकुन्तला विदा होगी इसलिए मेरा हृदय दु:ख से भर रहा है। आसुओं के बहने को रोकने से मेरा गला भर आया है। मेरी आँख चिन्ता के कारण निशचेष्ट हो गई है। जंगल में रहने वाले मुझको पुत्री के प्रति प्रेम के कारण इस प्रकार का दु:ख हो रहा है तो गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दु:ख से कितने अधिक दुखित होते होंगे।
विलक्षण प्रतिभा के धनी महाकवि कालिदास जंगल में रहने वाले एक ऋषि के माध्यम से वात्सल्य विप्रलम्भ श्रृंगार रस से युक्त यह श्लोक मार्मिक दृश्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में माना जा सकता है।
इस श्लोक में महाकवि कालिदास द्वारा पिता-पुत्री वियोग का बहुत मार्मिक दृश्य एवं पुत्री की करुण व्यथा को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।
साहित्य समाज का दर्पण होता है और यह नाट्य काव्य लगभग २००० वर्ष पूर्व रचित है , जो तत्कालीन पारिवारिक एवं सामाजिक भाव को प्रकट करता है। वैसे तो अभिज्ञानशाकुंतलम् महाभारत से लिया गया है लेकिन चतुर्थ अंक कवि कल्पित है जो की कालिदास के समय के सामाजिक मनोभावों को प्रकट करता है।[4] पिता पुत्री विरह की इस मार्मिक घटना की प्रथम अर्ध पंक्ति 'अद्य शकुन्तला यास्यति' पुत्री विरह वेदना के कारण करुण रस का संचार कर देती है।प्रारम्भिक अर्धपंक्ति ही पिता के जीवन की किसी बड़ी मार्मिक घटना की ओर संकेत कर देती है।[5]
'हृदयम् उत्कण्ठया संस्पृष्मट' इस श्लोक की प्रथम पंक्ति की वेदना को पूर्ण करने वाला है जो हृदय को अतिशय दु:ख से भरने वाला है।[6]
'कण्ठ:स्तम्भित वाष्पवृत्तिकलुष:'अर्थात भाव यह है कि पुत्री की सामने उपस्थिति के कारण आंसुओं का बाहर न आना उसको अन्दर ही केवल इसलिए रोकना कि पुत्री पिता के आंसुओं को न देख पाए अन्यथा शकुन्तला अपने पिता के दु:ख को देखकर अत्यधिक मर्माहत हो जायेगी। इसीलिए पिता के आंसुओं को रोकने के कारण गला भर जाता है।[7]

'दर्शनं चिन्ताजडम्' पुत्री की प्रत्येक मार्मिक गतिविधियों से युक्त घटनाओं का चिंतन करने के कारण किसी भी कार्य के प्रति अन्यमनस्कता आ गई है जिसके कारण दृष्टि अन्य किसी के प्रति निष्चेष्ट हो गई है।[8]

'वैक्लव्यं मम .....दु:खैर्नवै' इस श्लोक के द्वितीय पंक्ति का भाव यह है कि जो व्यक्ति राग से रहित होकर गृहस्थ धर्म का परित्याग कर दिया हो,एकांतवास के लिए वनागमन कर लिया हो, संयोगवश

पालक पिता के दायित्व का निर्वहन स्वार्थ से रहित होकर किया हो ऐसे तपस्वी को पुत्री वियोग का इतना दुःख हो रहा है तो गृहस्थ धर्म का निर्वहन करने वाला एक गृहस्थ किस असह्य वेदना को प्राप्त करते होंगे। इस अंदेशा को प्रकट करते हैं।[9]

इस प्रकार महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों के माध्यम से तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक जीवन का परिदृश्य बड़े ही सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक का यह श्लोक भाव, भाषा, नैसर्गिकता, प्रेम, प्रतिभा, कल्पनाशक्ति, वात्सल्यता एवं मार्मिकता के कारण साहित्य प्रेमियों को करुण रस से ओत-प्रोत कर देता है।

सन्दर्भ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – डॉ.कपिल देव द्विवेदी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– सुबोधचन्द्र पंत
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– सुबोधचन्द्र पंत
5. रघुवंशम्– डॉ श्री कृष्णमणि त्रिपाठी
6. मेघूदतम्– डॉ संसार चन्द्र, डॉ महोनदेव पंत
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ.कपिल देव द्विवेदी
8. मालविकाग्निमित्रम्–मोहनदेव पंत
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय